Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 17, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

# अनात्मवाद

**अनात्मवाद** बौद्ध दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है एवं ऐसी दार्शनिक भित्ति है जिस पर बौद्ध धर्म के समस्त आचार.विचार अपने आश्रय के लिए अवलम्बित हैं। अनात्मवाद में किसी स्थायी अथवा नित्य आत्मा का निषेध वर्णित है। चार्वाक एवं बौद्ध धर्म के अतिरिक्त अन्य सभी भारतीय दर्शन स्थायी अथवा नित्य तत्व के रूप में आत्मा की सत्ता को स्वीकार करते हैं, जो कि शरीरांत के पश्चात भी विद्यमान रहती है।

दर्शन में दो विचारधाराएँ होती हैं:

(1) आत्मवाद, जो आत्मा का अस्तित्व मानती है:

(2) अनात्मवाद, जो आत्मा का अस्तित्व नहीं मानती।

एक तीसरी विचारधारा नैरात्मवाद की भी है, जो आत्म-अनात्म से परे नैरात्मा को देवता की तरह मानती है। कुछ दर्शनों में आत्मवाद और अनात्मवाद का समन्वय भी पाया जाता है; यथा जैन दर्शन में। आत्मवाद ब्राह्मणपंरपरा या श्रौतदर्शन माना जाता है; अनात्मवाद के अंतर्गत चार्वाक के लोकायत और श्रमणपरंपरा के बौद्ध दर्शन का समावेश होता है। पुद्गल प्रतिषेधवाद और पुद्गल नैरात्मवाद भी इसके निकटतम दर्शनाम्नाय हैं।

चार्वाक दर्शन में परमात्म तथा आत्म दोनों तत्वों का निषेध है। वह विशुद्ध भौतिकवादी दर्शन है। किंतु समन्वयार्थी बुद्ध ने कहा कि रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार विज्ञान ये पाँच स्कंध आत्मा नहीं हैं। पाश्चात्य दर्शन में ह्यूम की स्थिति प्राय: इसी प्रकार की है; वहाँ कार्य-कारण-पद्धति का प्रतिबंध है और अंतत: सब क्षणिक संवेदनाओं का समन्वय ही अनुभव का आधार माना गया है। आत्मा स्कंधों से भिन्न होकर भी आत्मा के ये सब अंग कैसे होते हैं, यह सिद्ध करने में बुद्ध और परवर्ती बौद्ध नैयायिकों ने बहुत से तर्क प्रस्तुत किए हैं। बुद्ध कई अंतिम प्रश्नों पर मौन रहे। उनके शिष्यों ने उस मौन के कई

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 17, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

प्रकार के अर्थ लगाए। थेरवादी नागसेन के अनुसार रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान का संघात मात्र आत्मा है। उसका उपयोग प्रज्ञप्ति के लिए किया जाता है। अन्यथा वह अवस्तु है। आत्मा चूँकि नित्य परिवर्तनशील स्कंध है, अत: आत्मा इन स्कंधों की संतानमात्र है। दूसरी ओर वात्सीपुत्रीय बौद्ध पुद्गलवादी हैं, इन्होंने आत्मा को पुद्गल या द्रव्य का पर्याय माना है। वसुबंधु ने 'अभिधर्मकोश' में इस तर्क का खंडन किया और यह प्रमाण दिया कि पुद्गलवाद अंतत: पुन: शाश्वतवाद की ओर हमें घसीट ले जाता है, जो एक दोष है। केवल हेतु प्रत्यय से जनित धर्म है, स्कंध, आयतन और धातु हैं, आत्मा नहीं है। सर्वास्तिवादी बौद्ध संतानवाद को मानते हैं। उनके अनुसार आत्मा एक क्षण-क्षण-परिवर्ती वस्तु है। हेराक्लीतस के अग्नितत्व की भाँति यह निरंतर नवीन होती जाती है। विज्ञानवादी बौद्धों ने आत्मा को आत्मविज्ञान माना। उनके अनुसार बुद्ध ने, एक ओर आत्मा की चिर स्थिरता और दूसरी ओर उसका सर्वथा उच्छेद, इन दो अतिरेकी स्थितियों से भिन्न मध्य का मार्ग माना। योगाचारियों के मत से आत्मा केवल विज्ञान है। यह आत्मविज्ञान विज्ञप्ति मात्रता को मानकर वेदांत की स्थिति तक पहुँच जाता है। सौत्रांतिकों ने-दिड;नाग और धर्मकीर्ति ने-आत्मविज्ञान को ही सत् और ध्रुव माना, किंतु नित्य नहीं।

पाश्चात्य दार्शनिकों में अनात्मवाद का अधिक तटस्थता से विचार हुआ, क्योंकि दर्शन और धर्म वहाँ भिन्न वस्तुएँ थीं। लॉक के संवेदनावाद से शुरु करके कांट ओर हेगेल के आदर्शवादी परा-कोटि-वाद तक कई रूप अनात्मवादी दर्शन ने लिए। परन्तु हेगेल के बाद मार्क्स, रोंगेतस आदि ने भौतिकवादी दृष्टिकोण से अनात्मवाद की नई व्याख्या प्रस्तुत की। परमात्म या अंशी आत्मतत्व के अस्तित्व को न मानने पर भी जीवजगत् की समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सकता है।

**बौद्ध दर्शन** से अभिप्राय उस दर्शन से है, जो भगवान **बुद्ध** के **निर्वाण** के बाद बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विकसित किया गया तथा बाद में पूरे एशिया में उसका प्रसार

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 17, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

हुआ। दुःख से मुक्ति **बौद्ध धर्म**, दर्शन का प्रारंभ से ही मुख्य उद्देश्य रहा है। कर्म, ध्यान तथा प्रज्ञा इसके साधक रहे हैं।

बुद्ध के उपदेश **तीन पिटकों** में संकलित हैं-

1. सुत्त पिटक
2. विनय पिटक
3. अभिधम्म पिटक

## बौद्ध धर्म के प्रमुख दर्शन-

- **अनीश्वरवादी धर्म-** बौद्ध धर्म ईश्वर की सत्ता नहीं मानता।
- **नास्तिक दर्शन/ धर्म** – वेदों की प्रमाणिकता का खंडन करता है,अर्थात् वेदों में आस्था नहीं रखता।
- **वर्ण व्यवस्था का विरोध**
- **यज्ञ, कर्मकांड, पशुबलि का विरोध**
- **क्षणिकवाद / क्षणभंगुरवाद** –
  - जीवन और जगत की प्रत्येक घटना का अस्तित्व क्षणमात्र है।
  - जीवन और जगत की प्रत्येक घटना प्रतिक्षण परिवर्तनशील है।
  - स्थिर कुछ भी नहीं है।
- **अनात्मवाद / नैरात्मवाद** – यह **बौद्ध धर्म** का आत्मा संबंधी सिद्धांत है। इसके अनुसार आत्मा प्रतिक्षण परिवर्तनशील है तथा यह पंच स्कंधों का संघात(योग, जोङ) है।
  - अनात्मवाद का शाब्दिक अर्थ है(आत्मा का अस्तित्व न होना)। चूँकि बौद्ध धर्म में आत्मा को परिवर्तनशील माना गया है,अतः अन्य धर्मों में आत्मा के माने गये गुण (शाश्वत, नित्य, स्थाई, अजर, अमर आदि) समाप्त होते हैं । इस रूप में बौद्ध दर्शन में आत्मा संबंधी सिद्धांत को अनात्मवाद कहा गया है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 17, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

- **पंच स्कंद**(रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा, संस्कार)। इनमें से 4 को(वेदना, विज्ञान, संज्ञा, संस्कार) **नाम** कहा गया है।

- बौद्ध धर्म **कर्म एवं पुनर्जन्म** को स्वीकार करता है। तथा पुनर्जन्म के लिये **कर्मों** को उत्तरदायी मानता है।

## • प्रतीत्यसमुत्पाद एवं द्वादश निदान (12 उपचार)-

यह बौद्ध दर्शन का **केन्द्रीय** सिद्धांत है। यह बौद्ध दर्शन का कारणता / कार्य – कारण सिद्धांत है। इसके अनुसार जीवन और जगत की प्रत्येक घटना एवं **कार्य- कारण पर निर्भर** रहते हैं।

## 12 निदान इस प्रकार हैं-

1. अविद्या – (अज्ञान – कर्म – दुःख का मूल कारण)
2. संस्कार
3. विज्ञान – चेतना (भ्रूण) / जन्म
4. नामरूप – आत्मा बनती है।
5. षडायतन (सलायतन) – 6 इन्द्रिया
6. स्पर्श
7. वेदना
8. तृष्णा
9. उपादा◌ान (तीव्र इच्छा)
10. भव – जन्म गृहण करने की प्रवृति
11. जाति – पुनर्जन्म की इच्छा
12. जरा – मरण

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 17, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

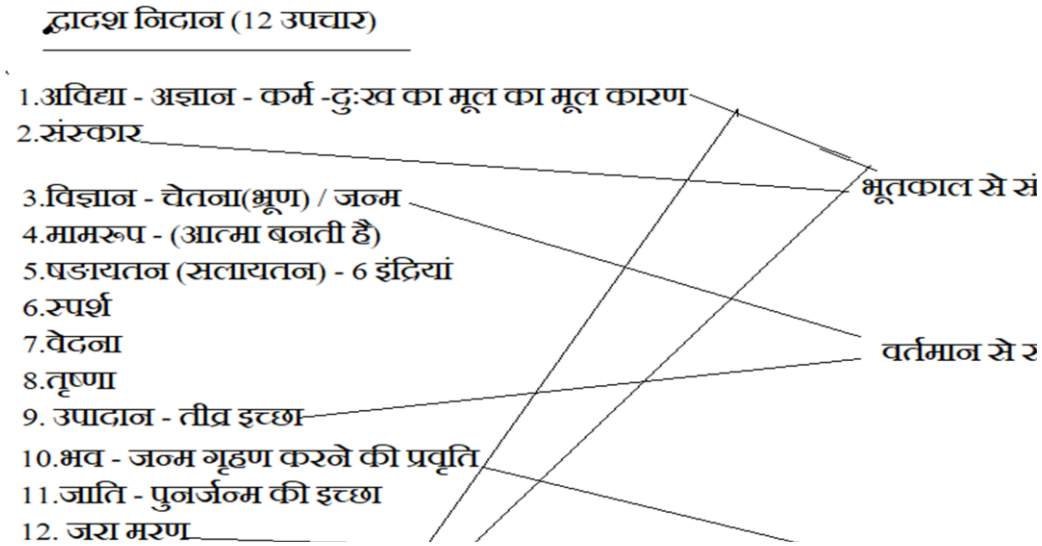


- मध्यमप्रतीपदा(मध्यममार्ग)-

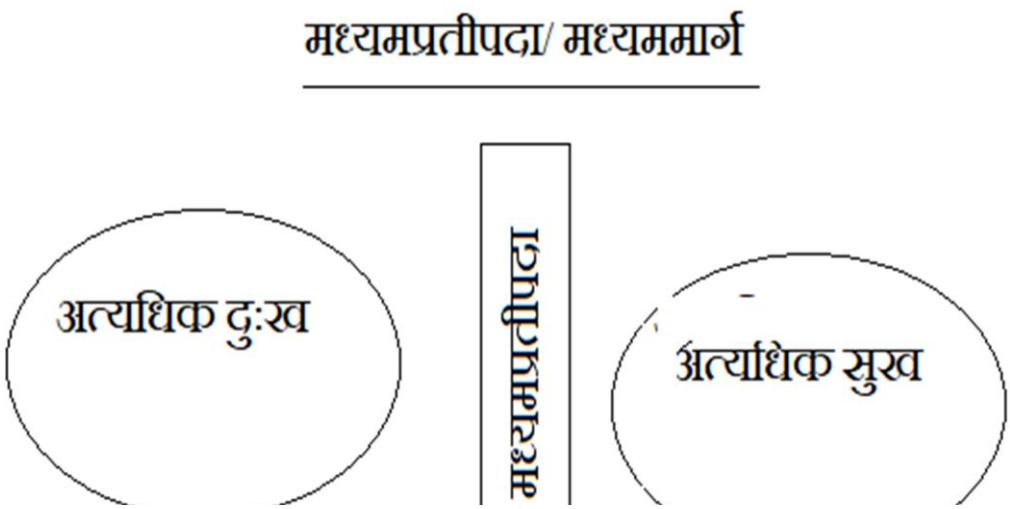

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 17, 2020
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

मध्मप्रतीपदा बौद्ध धर्म का मूल सिद्धांत है,जो दो अतिवादी विचारों के बीच का मार्ग है। बौद्ध धर्म अतिवादी धर्म नहीं है। **उदारहण** –जीवन में अत्यधिक दुः ख भी नहीं तो अत्यधिक सुख भी नहीं होना चाहिए।

## • शून्यवाद-(माध्यमिक शून्यवाद)

**महायान** बौद्ध धर्म से संबंधित सिंद्धांत । यह सिद्धांत **नागार्जुन** ने दिया था।

प्रत्येक घटना एवं कार्य – कारण पर निर्भर होने के कारण शुन्य हैं। अर्थात् उनका संबंध स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है।

## • योगाचार विज्ञानवाद-

**मौत्रेयनाथ** ने इसकी स्थापना की थी। **असंग** इसके विस्तारक थे। यह सिद्धांत **महायान बौद्ध धर्म** से संबंधित था।

### अनात्मवाद

अनात्मवाद वह वाद है जिसमें आत्मा का निषेध हो। श्रमणपरम्परा या बौद्ध दर्शन में इसकी अवधारणा है। इसे नैरात्मवाद, पुद्गल प्रतिषेधवाद या पुद्गल नैरात्मवाद के नाम से भी जाना जाता है। पाली में इसे ही अनत्तावाद कहा जाता है।

बुद्ध ने इसे शाश्वतवाद, जिसमें आत्मा नित्य, कूटस्थ, चिरन्तन, तथा एकरूप माना जाता है , तथा उच्छेदवाद, जिसमें कहा जाता है कि आत्मा है ही नहीं, से अलग बीच का रास्ता कहा।

बुद्ध ने यह सिद्ध किया कि उनका अनात्मवाद अभौतिक नैरात्म्यवाद है। उन्होंने कहा कि

रूप आत्मा नहीं है, वेदना आत्मा नहीं है, संज्ञा आत्मा नहीं है, संस्कार आत्मा नहीं है, विज्ञान आत्मा नहीं है। रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान तो पांच स्कन्ध हैं। अर्थात आत्मा स्कन्ध से भिन्न है, फिर भी उसके घटक में ही स्कन्ध समझे जाते हैं। वास्तव में अनात्मवाद की व्याख्याएं बुद्ध से पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में उनके मौन हो जाने के निकाले गये अर्थों पर निर्भर करती हैं। यही कारण है कि अन्त्मवाद क्या है इसपर विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं।

चाहे जो हो, सभी इस बात पर बल देते हैं कि अनात्मवाद निर्वाण की अनिवार्य शर्त है। स्कन्ध बाधाओं या रोगों के अधीन हैं। ये अनित्य हैं अर्थात् दुःख हैं। जब ये आत्मा नहीं तो इनसे निर्वेद प्राप्त करना चाहिए। विरक्ति या अनासक्ति द्वारा ही मोक्ष या निर्वाण प्राप्त हो सकता है।

**Dr. Kumar Sonu Shankar**
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy
Mobile 8210837290
Whatsapp 8271817619
E-mail Id – kumar999sonu@gmail.com